छत्तीसगढ़ी भक्ति लोकगीत में शांत रस की प्रधानता

श्रीमती संगीता रंगारी
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी)
वीरांगना रानी अवन्ती बाई लोधी शासकीय कला
एवं वाणिज्य महाविद्यालय, रामाटोला
जिला– राजनांदगांव (छ.ग.)

शोधसार –संसार के समस्त प्राणी शांतिपूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में छत्तीसगढ़ी लोकगीत में शांत रस की व्यक्ति को अभिहित किया गया है। आज हम जिस भी अच्छी बुरी स्थिति में खड़े हैं। वह हमारे कर्मों का ही फल है। जीवन में सुख शांति एवं भटकाव से मुक्ति हमें भजन, ईश्वर की स्तुति के माध्यम से ही हासिल होती है। यानी जीवन में कुछ समय शांति की स्थापना के लिए ईश्वरी भक्ति भजन कर मन शांत किया जा सकता है।

प्रस्तावना –गीत मानव मन को हर्षित एवं प्रफुल्लित करते हैं। तभी तो हर व्यक्ति गीत गुनगुनाते चाहता है। चाहे उसे सुर एवं ताल का ज्ञान हो या ना हो। आज की भाग दौड़ की जिंदगी में मनुष्य नाना प्रकार की समस्याएं एवं तनाव से घिरा है। संगीत सुनकर कुछ हद तक उसे शांति का अनुभव होता है। आत्मिक सुख की प्राप्ति होती है।किसी भी शुभ अवसर पर चाहे पर्व हो, कोई उत्साह हो, चाहे मांगलिक कार्यक्रम हो, माहौल संगीत में होता है। क्योंकि गीत में रस होता है। और उस रस के निर्झर से मनुष्य को आत्मिक शांति प्राप्त होती है और मन प्रफुल्लित होता है।

मनुष्य में तीन प्रकार की मनोवृत्ति होती है जो उसे सुख, शांति एवं मोद प्रदान करती है–

1. पोशिनी वृत्ति –यह वृत्ति भोजन वस्त्र मकान भोग आदि के लिए उत्तरदायी है
2. तोशिनी वृत्ति –यह वृत्ति मां को तोष या मानसिक पोषण प्रदान करती है
3. मनोमेदिनी वृत्ति –यह वृत्ति आनंद प्रदान करती है

वास्तव में रस्सी आनंद प्रदान करने वाली अनुभूति है जो हमें लोकगीत से प्राप्त होती है।

डॉ श्याम परमार के मतानुसार–"गीतों की यह परंपरा तब तक जीवित है जब तक मानव का अस्तित्व विद्यमान है। आदिमानव के कंठ से जो भाव निकले थे वह कालांतर में गीत बन गए"।

निर्वेद या समशांत रस की स्थाई भाव है। उत्तम प्रकृति के व्यक्तियों में इस रस का उद्रेक होता है।

"शांत शमस्थायिभाव उत्तम प्रकृति मर्तः।"[1]

इसमें ईश्वरी भक्ति एवं आत्मिक शांति की भावना प्रधान रूप से निहित होती है।

लोक भजन में शांत रस –

छत्तीसगढ़ी जनमानस ईश्वर भक्ति एवं गुरूभक्ति पर विश्वास करते है। कबीर पंथियों में होने वाले चौका गीत में गाय के गोबर से लिखने एवं स्वर्ण कलश को मोतियों से सुसज्जित करने की परंपरा है। यह परम्परा केवल छत्तीसगढ़ में ही नहीं बल्कि भारतीय लोक साहित्य में भी है। इसी परंपरा से ओत–प्रोत चौका गीत अधोभाँती हैं –

गुरुजी को लावन परघाय के हो संतो भाई,
साहब आइन घर के तीर,
गुरूजी आवत–जावत सुन पाइतेव,
सोन के कलश जलाइतेंव। 2

भक्ति भजन से जीवन की नैया सुगमता से पार लग जाती है। मन की शांति के लिए भजन श्रेयश्कर औषधि की भांति कारगर साबित होता है–

प्राणी तर जाही रामा चोला तर जाही रामा
गा के भजन हरि के पाणी तर जाही रामा
कासी घुमेंव मथुरा घुमेंव नइहें कहूं भलाई
मन हे चंगा कठोती मं गंगा हिरदे हरि समाई
मंदिर पूजे गिरजा पूजे मस्जिद अलख जगाई
अरजा जोरे सरधा टोरे रद्दा न कंहूबनाई
धरमी रोवै पापी हांसे जरगे करम कमाई
एक आसा हे हरि भजन के जिनगी पार लगाई। 3

ईश्वर की स्तुति से जीवन रूपी नैया को पार किया जा सकता है।

दुनिया की रीत निराली होती है। जीवन की सच्चाई तंबूरे के माध्यम से प्रकट होता है यह अभिव्यक्ति पारम्परिक भजन (देवगीत) दृश्टव्य है –

झन देख सुनझनबोल
मेरे बोले तंबूरा साहेब जी
साँच बात महुरा कस लागे, गोठ लबारी आय
देख दूसर ला हांसन लागे,अपन दरि बगियाय
जांगर टोर कमइया मनखे, भूखे लांघन सुति जाय
दूसर के जिनिस ल दूसर ह अपनेच मान लुटाय
मोर बोलेतंबूरा
करनी बिन कथनील कहिथे, मुरूख जे दिन रात
कुकुर असन वो भुंकन फिरथे, सुनी सुनाई बात
जाने संदर मार्यादा ला नरवा, के काहे बिसात
ज्ञानी के सब हांसी उडावे, माने मुरूख के बात
मोर बोले तंबूरा
दिनमान जे हपटत रेंगे, रात मं दउड़ लगाय
उजियारी मंसंत के, चोला रतिया मं मौज उड़ाय

सबके आघु दान धरम के, बईठे बजार न लगाय
लुटत खानी रहे एकेझन कोन्हो जान न पाय
मोर बोले तंबूरा
दूसर केबल मं अकड़त हे, अपन धाक जमाय
बेरा परे मं पाछू भागे सिधवा, बइला बन जाय
आमा के रूख ला जेहा, लगाये फल ओखर नई खाय
दुनिया के ये रीत अजब हे बिंदु ल दोश लगाय
मोर बोले तंबूरा। 4

जसगीत में शांत रस–

प्राचीन काल से ही छत्तीसगढ़ी जनमानस मातृशक्ति की उपासक रहा है। यही कारण है कि यहां का जनमानस अपने प्रदेश को "छत्तीसगढ़ महतारी" कह कर संबोधन करता है। चाहे वह डोंगरगढ़ की मां बमलेश्वरी हो, चाहे रतनपुर की महामाया, चंद्रपुर की चंद्रहासिनी हो, चाहे बस्तर की दंतेश्वरी माई।ये सभी लोक देवियां अनेक रूपों से यहां के जनमानस के लिए आस्था का प्रतीक है। नवरात्र में पूरे 9 दिनों तक माता की उपासना कर जस एवं जंवारा गीतों के माध्यम से संपूर्ण छत्तीसगढ़ भक्तिमयवातावरण से आलोकित होता है–

बाटे के तीर बाटे करेलिया, जामथे दुई–दुई पान हो मइया

नींदत कोडत मइया मैं धन देखेंव, फुल टोरत रचिगे काया हो माय

झीनी रे कपडा पहिर कर माता, चल हे पदुमिया नारी हो माय

लुरकुट चेरिया संकट परगे माया मोर, मारत डंक कपारी हो माय। 5

मोहमाया के जाल में फंसे हुए व्यक्ति के लिए शांतिकी तलाश में ईश्वरीय भक्ति ही उसका एक मात्र सहारा होता है।

जस गीत मातृभक्ति रस से ओत–प्रोत लोक मानस के प्रति प्राकृतिक आस्था से आलोकित करते हैं। लोक साहित्य का सदैव मुखरित रूप देखने मिलता है। इसी के अंतर्गत जंवारा लोकगीत (आरती) में देवी–देवताओं की स्तुति की जाती है। प्रकृति द्वारा प्रदत्त विभिन्न वस्तुओं को माता के चरणों में अर्पित किया जाता है। इस लोकगीत में तन को दीपक एवं मन को बाती स्वरूप मानकर प्रेमरूपी तेल डालकर स्वयं के साथ ही साथ जगत के कल्याण की भावना सन्निहित हैं–

आरती हो माय सवांगाले ले

लेई लेबे हियर लगाय ओ सवांगा ले

तन लागे दीया अउ मन लागे बाती

प्रेम के तेलजलाइके जरत हे सारी राती

हो सवांगा ले ले

आसन मार सिंगासन बइठे, लिम्बू लाट सदफल लटके

आती–पाती देवता बइठे मांझ मचोलना माता बइठे

चौंसठ जोगनी करे आरती लंगुरा चंवर डोलाय हो सवांगा ले ले। 6

उपरोक्त गीत में यश का छत्तीसगढ़ी रूपांतरण जस है। अर्थात देवी की महिमा का बखान कर गान करना है। जसगीत में देवी के श्रृंगार का वर्णन आत्मिक शांति को फलीभूत करता है –

मईया फुल गजरा, गूंथव हो मालिन

माई बर फुल गजरा

काहेन फुल के अजरा गजरा, काहेन फुल के हार

काहेन फुल के माथमटुकिया, सोलह हो सिंगार

माई बर फुल गजरा

चम्पा फुल के अजरा गजरा, काहेन फुल के हार

मोंगरा फुल के माथ मटुकिया, सोलह हो सिंगार

माई बर फुल गजरा

कोन माई बर अजरा गजरा कोन माई बर हार

कोन माई बर माथ मटुकिया, सोलह हो सिंगार

माई बर फुल गजरा

कोदईया माई बर अजरागजरा, धनैया माई बर हार

बुढ़ी माई बर माथ मटुकिया, सोलह हो सिंगार

माई बर फुल गजरा। 7

जस गीत प्रकृति उपासना से अभीहीत गीत है। उपरोक्त वर्णित गीत में कोदईया (कोदो) खाद्यान्न है। धनैया अर्थात धान। यहां लोकजन के लिए अन्न भी मां के सदृश हैं।

प्रकृति उपासना के स्वर जस गीतों में अधिक मुखरित हुए हैं। जस गीत गायक बारहमासी गीतों में पूरे बारह माह की महत्ता का वर्णन करते हैं। जिसमें चिरशांति प्रदान करने वाला भाव होता है–

कातिक महिना धरम के हो माय

तुलसी म दियना जलाय हो माय

अघ्घन महिना अगम के हो मोर माया

पुस म हनत तुसार हो माय

माघ महिना धन अमुवा मउरे

फागुन उड़त हे गुलाल हो माया

चईत महिना धन रे सुवा फुले

बइसाख म घाम जनाय हो माय

जेठ महिना लिख पतिया भेजेंव

आवत लग गे असाड़ हो माय

सावन महिना रिमरिस बरसे

भादों अहीर भइगे नम्मी दसेरा

धनु धजा ल पांडों सम्हार हो माय

चलत–फिरत मईया तोरे जय गायेंव । 8

प्रकृति पूजा एवं मातृशक्ति की भक्ति से आप्लावित इस प्रकार के पर्व यहां के जनमानस के साक्षी स्वरूप है।

पंथी गीत में शांत रस –

पंथी गीत में आध्यात्मिक के भाव परिलक्षित होते हैं। इसमें शांत रस का निरूपण हुआ है–

सत्य मे हे धरती, सत्य में आकाश हो,
सत्य में चंदा, अरू सत्य में सुरूज हो,
सत्य में तर जाही संसार, किथे गुरू हा हमार,
अमरित घार बोई दे,
होई जाही बेड़ा पार,
सतगुरू महिमा बताई दे।9

उपरोक्त पंथीगीत में प्रकृति के शाश्वत सत्य का चित्रण किया गया है कि संसार का कल्याण सत्य के कारण ही है।

शोध प्रविधि–

प्रस्तुत शोध पत्र में सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है। एवं पुस्तकालय पद्धति का भी प्रयोग किया गया।

शोध का उद्देश्य –छत्तीसगढ़ी लोक साहित्य पर विहंगम दृष्टि डालते हुए छत्तीसगढ़ी लोकगीत में शांत रस की व्याप्ति का अध्ययन करना।

निष्कर्ष –

सेवा की राह इतनी आसान नहीं होती है। स्वयं को सेवक या दास बनाने का भाव और उस भाव के अनुरूप जीना किसी साधन से काम नहीं है। अपनी इच्छाओं, अपेक्षाओं और आकांक्षाओं से दूर रहकर निस्वार्थ भाव से सेवा करना किसी अग्नि परीक्षा से कम नहीं है।

ईश्वरी भक्ति साधना में भी व्यक्ति रम जाता है। तब वह बाहृय स्वरूप से आकर्षित नहीं होता। ऐसे भाव से व्यक्ति पथिक बन जाता है तो उसे स्वमेव सुख, शांति, आत्मिक अनुभूति, आहलाद, परस्पर मिल ही जाता है। जो समय बीत गया वह यदि पीड़ा दुख देने वाला एवं असंतोषजनक रहा हो, फिर भी इतनी गुंजाइश अभी बाकी हैकि हाथ में जो कुछ बचा खुचा है। यदि उसे संभाल कर रखा जाए एवं उसका

सही तरीके से उपयोग किया जाए जिससे बिगड़ा हुआ भी सुधर जाए यानि जीवन में कुछ समय शांति की स्थापना के लिए ईश्वरी भक्ति भजन कर मन शांत किया जा सकता है।छत्तीसगढ़ी जनमानस शांति एवं सादगी पसंद करता है। यही शांति एवं सादगी यहाँ के लोकगीतों में परिलक्षित है।

संदर्भ सूची–

1. साहित्य दर्पणः विश्वनाथ : 3/245
2. पाठक डॉ. विनय कुमार, संकल्परथ अक्टूबर 1997, कबीर पंथी छत्तीसगढ़ी लोक भजन पृष्ठ संख्या 25
3. सूचक– यादव पीसी लाल
4. हर्श कुमार बिन्दु जमात पारा, राजनांदगांव छत्तीसगढ़ से संकलित
5. यादव पीसी लाल, छत्तीसगढ़ी लोकगीत विधि आयाम रायपुर : सर्वप्रिय प्रकाशन पृष्ठ संख्या 52
6. – वही – पृष्ठ संख्या 52
7. निजी संग्रह
8. रेडियों संकलन
9. सोनी जे.आर. पंथी गीत एवं राष्ट्रीय चेतना, रायपुर वैभव प्रकाशन पृष्ठ संख्या 21.